International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 355-357

राष्ट्रगीत वन्देमातरम् के सृजन स्त्रोत

डॉ. महेन्द्रसिंह राजपुरोहित*

प्रस्तावना

मातभूमि के प्रति भावात्मक लगाव प्रत्येक देशवासियों के लिए नितान्त स्वाभाविक हैं। भारतीय राष्ट्रवाद मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा का भाव हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार, हमारी राष्ट्रीयता 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की भावना से अनुप्राणितरही हैं। अर्थात् जन्म भूमि को 'मातृभूमि' कहकर वन्दन करना भारतीय कल्पना एवं परम्परा है। इसी परम्परामें ही देशवासियों को राष्ट्र धर्म में दीक्षित करने हेतु बंकिमचन्द्र ने लिखा – 'वन्दे मातरम्'।

वन्देमातरम् बंकिम की साहित्यिक प्रतिभा और राष्ट्रीय चिन्तन की अक्षुण्य अभिव्यक्ति हैं। वन्देमातरम् का अर्थ हैं। माँ की वन्दना। यह गीत प्रथम बार आनन्दमठ (1882) में प्रकाशित हुआ। उक्त गीत पूरे स्वाधीनता संग्राम में देश की प्रेरणा एवं श्रद्धा का प्रतीक बना रहा। स्वातन्त्रय चेतना से अनुप्राणित परवर्ती युवा पीढी को वन्देमातरम् ने इतना प्रभावित किया कि वे देश हिताथ बलिदान हेतु तत्पर हो उठे। आज भी जनमानस में इस गीत के प्रति अगाध श्रद्धा का भाव विद्यमान हैं।

वन्देमातरम् के सृजन–स्त्रोत

वन्देमातरम् गीत के उद्भव एवं प्रेरणा स्त्रोत विषयक अनेक बाते प्रचलित हैं। कुछ लोगों का मानना हैं, कि कलकत्ता से कांटालपाडा जाते हुए रेल से बंकिम ने जन्मभूमि का जो प्राकृतिक सौन्दर्य देखा, उसी से प्रेरित होकर उक्त गीत लिखा। दूसरी मान्यता के अनुसार इस गीत का श्रेय उनकी पुत्री को हैं। पुत्री के आग्रह पर उन्होंने यह गीत लिखा। जबकि तीसरी कथा के अनुसार, बंकिम को इस गीत का उद्बोध स्वप्न में हुआ। नींद में स्वप्न देखते हुए वे उच्चारण करते रहे और पास बैठे भतीजे ने उसे लिख दिया।[1]

उपर्युक्त तीनों घटनाओं को अस्वीकार करते हुए बंकिम बाबू के भतीजे श्रीयुत् शचीशचन्द्र चटर्जी ने लिखा हैं, 'मेरा विश्वास हैं कि यह गीत झटके में नहीं लिखा गया हैं। जब तक लेखक आत्मस्थ न हो, तन्मय न हो, अनुप्राणित न हों।

तब तक नहीं लिखा जा सकता हैं। बंकिम बाबू आम लेखकों की तरह लिखकर तुरन्त नहीं छपाते थे।'[2]

वस्तुतः वन्देमातरम् के सृजन की प्रेरणा बंकिम को भारतीय वांड्मय में अन्तर्निहित मातृभूमि के गौरवगान संबंधी विविध प्रसंगों, अपने पितामह की जुबानी कहानियों, हिन्दु मेला अपने साहित्यिक गुरू ईश्वरचन्द्र गुप्त की रचनाओं, आमार दुर्गोत्सव तथा '**एक टी गीत**' नामक लेखों, तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना की लहरों इत्यादि से मिली। **वन्देमातरम् के इन प्रेरणा स्त्रोतों का संक्षिप्त विवेचन अप्रासंगिक न होगा।**

- **मातृभूमि का गौरवगान : वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में**

धौरुपिता जनिता नाभिरत्र
बन्धुर्मेमाता पृथिवी महीयम्

आकाश मेरा पालन करने वाला पिता हैं, वहीं केन्द्र वही बन्धु हैं और यह विशाल भूमि मेरी माता हैं।) ऋग्वेद 2/3/20 सूक्त 164/13

* सह आचार्य – राजनीति विज्ञान, राजकीय बांगड़ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पाली, राजस्थान।

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्या (अथर्ववेद 12/1/15)

(भूमि माता हैं और मैं उसका पुत्र हूँ।)

नेयं स्वर्णपुरी लंका रोचते मम लक्ष्मण।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीय सी ।। (वाल्मीकि रामायण)

इस प्रकार, पृथ्वी विशेषतः जन्मभूमि को 'मातृभूमि' कहकर वन्दन करना भारतीय परम्परा हैं।

- **बंकिम के साहित्यिक गुरू श्री ईश्वरचन्द गुप्त द्वारा भारत भूमि को जननी कहकर सम्बोधित करना**

जननी भारत भूमि, आर केन थाक तुमि,

धर्म रूप भूषाहीन हये।

तोमार कुमार जत, सकलेई ज्ञान हत,

मिछे केन मन भार बये ।।

जानना कि जीव तुमि जननी जन्मभूमि

जे तोमारे ह्रदय रे खेछ।

थाकिया मायेर कोले संतान जननी भोले,

के कोथाय ए मन देखे छे ।।[3]

उल्लेखनीय हैं कि बंगाल के तत्कालीन कवियों ने राष्ट्रीय चेतना के अनेक गीत लिखे, पर इनमें भारत को मातृभूमि की संज्ञा नहीं दी गई थी, उस समय ईश्वरचन्द्र गुप्त ने प्रथम बार भारत को 'जननी कहा था। गुप्त जी के पश्चात् बंकिम ने आमार दुर्गोत्सव तथा 'वन्देमातरम' में भारत भूमि को 'मातृभूमि' कहकर सम्बोधित किया।[4]

- **हिन्दु मेला से प्रेरणा**

बंगाल के नवजागरण में हिन्दु – मेला का महत्वपूर्ण योगदान हैं। सन् 1866 में मेदिनीपुर में राज नारायण बसु प्रणीत 'जातीय गौरव प्रचारिणी सभा' ने हिन्दू मेला आरम्भ किया। इसके आयोजन में ठाकुर परिवार की देन अविस्मरणीय है। इसी मेले के एक समारोह में श्री सत्येन्द्र ठाकुर ने महत्वपूर्ण गीता गाया।

मिले सब भारत संतान

एक तन मन प्राण ।

गाओ भारतेर यश गान।।

हिन्दु मेला के आदर्श के संबंध में प्रथममंत्री गगेन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा हैं, 'हमारा भारतवर्ष जिससे आत्मनिर्भर हो, यह विचार प्रत्येक भारतवासी का हो, यही इस मेले का उद्देश्य हैं।' इस प्रकार, हिन्दु मेला ने बंगाल में राष्ट्रभक्ति की भावना उत्पन्न करने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

राजनारायण बसु की पुस्तक 'हिन्दु धर्म की श्रेष्ठता की समालोचना करते हुए बंग–दर्शन में बंकिमचन्द्र ने लिखा – राजनारायण बाबू की लेखनी पर पुष्प चन्दन वृष्टि हो। यह महागीत सम्पूर्ण भारत के लिए गीत बने। हिमालय की कन्दराएं गूंज उठे। गंगा, यमुना, सिन्धु, नर्मदा और गोदावरी के तटो पर स्थित प्रत्येक वृक्ष मर्मरित हो उठे। पूर्व और पश्चिम के सागर के गम्भीर गर्जन से मंदीभूत हो कोटि कोटि भारतवासियों का ह्रदयतंत्र इसके साथ बजता रहे।'[5] इस चार बकिम के अन्तःकरण पर उपर्युक्त प्रेरणा स्त्रोतों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

- **1772 के सन्यासी विद्रोहियों का रणनादः 'ओऽम वन्देमातरम्'**

डॉ0 भूपेन्द्रनाथ दत्त ने लिखा हैं – ढाका के रमना के काली मन्दिर के महाराष्ट्रीय स्वामी जी कहा करते थे कि सन्यासी योद्धा 'ओम् वन्देमातरम' का रणनाद करते थे।[6] परन्तु इस संबंध में अभी तक स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं हो पाये हैं।

- **आमार दुर्गोत्सव : वन्देमातरम् गीत का जनक**

वन्देमातरम् गीत के जन्म के संबंध में सभी विद्वानों ने एक मत से यह स्वीकार किया हैं कि 'आमार दुर्गोत्सव' नामक लेख ही इस गीत का जनक हैं। स्वयं बंकिम के वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता हैं :

हां, यही मां हैं। पहचान गया। यही मेरी जननी हैं– जन्मभूमि हैं। यही मृण्मयी – मृतिकारूपिणी – अनन्त रत्नभूषिता इस क्षण काल गर्भ में निहिता हैं। रत्न मंडित दस भुजा–दस, दिक्–दसों दिशाओं में प्रसारित, इसमें विभिन्न आयुध रूप में नाना शक्ति शोभित हैं। पदतल में शत्रु विमर्दित पदाश्रित वीर जन केशरी शत्रु निपीड़न में नियुक्त हैं। दिग्भुजा नामा प्रहरण प्रहारिणी शत्रु मर्दिनी वीरेन्द्र पृष्ठ विहारिणी, दक्षिण में लक्ष्मी भाग्य रूपिणी, वाम में विद्या विज्ञान मूर्तिमयी साथ में बलरूपी कार्तिकेय, कार्यसिद्धि रूपी गणेश। मैंने उसी काल स्त्रोत में देखा – इस सुवर्णमयी बंग प्रतिमा को.....।[7]

प्रोफेसर भवतोष दत्त ने लिखा हैं–वन्देमातरम गीत में जिस मातृभूमि की कल्पना की गई उनकी जानकारी कमलकान्त के दफ्तर के आमार दुर्गोत्सव रचना से प्राप्त होती हैं। वहां मातृभूमि दशभुजा के रूप में प्रकट होती है। कमलाकान्त मां – मां कहता हुआ उन्हें पुकार रहा हैं।, संकल्प कर रहा हैं। वह काल समुद्र से माँ का उद्धार कर पुनः प्राचीन महिमा में उन्हें मंडित करना जाता हैं। उसका यह संकल्प आनन्दमठ के संतानों की तरह का था। 'आमार दुर्गोत्सव' रचना के समय में ही 'वन्देमातरम' की रचना हुई थी, इसमें तनिक भी संदेह नहीं। गम्भीर देश प्रेम भावना और मातृभूमि की जननी के रूप में कल्पना कर तीव्र भावावेग से वे अभिभूत हो उठे और फलस्वरूप मातृभूमि के रूप में वन्देमातरम् मंत्र उनके कंठ से फूट पड़ा। इन दोनों रचनाओं में धनिष्ठ संबंध हैं, विशेषतः मातृभूमि की दुर्गाविग्रह के रूप में कल्पना करना। इसके पूर्व बंकिम की किसी भी रचना में यह कल्पना नहीं मिलती।[8]

सांराश

वन्देमातरम् गीत के सृजन एवं प्रेरणा स्त्रोत के बारे में विविध विवरण प्राप्त होते है, परन्तु इतना तय है कि इस गीत की रचना आनन्दमठ उपन्यास से काफी पहले 1876 में हुई तथा तत्पश्चात इसे आनन्दमठ उपन्यास में जोडा गया। इस गीत में मातृभूमि की जिस प्रभावशाली ढ़ग से वन्दना की गई है, यह अन्यत्र दुर्लभ है। वस्तुतः देशभक्ति का धर्म इस गीत का मुख्य तत्व है।

सदंर्भ ग्रन्थ सूची

1. अमरेन्द्रलक्ष्मण गाडगिल द्वारा लिखित एवं वन्दे मातरम् शताब्दी समारोह स्मारिका (बड़ा – बाजार कुमार सभा पुस्तकालय) में वन्देमातरम् शीर्षक से प्रकाशित लेख में उपर्युक्त तीनों घटनाएँ वर्णित हैं। पृ0 22
2. श्री शचीशचन्द्र चट्टोपाध्याय ; बंकिम जीवनी, प्रथम संस्करण। विश्वनाथ मुखर्जी कृत पूर्व वर्णित में पृ0 35 पर उद्धृत
3. विश्वनाथ मुखर्जी (पूर्व वर्णित) पृ0 26 पर उद्धृत।
4. डॉ0 शिवनारायण खन्ना (वन्देमातरम् शताब्दी समारोह स्मारिका) (पूर्व वर्णित) पृ0 47
5. विश्वनाथ मुखर्जी ; (पूर्व वर्णित) पृ0 31 पर उद्धृत।
6. डॉ0 भुपेन्द्रनाथ दत्त– भारतेर द्वितीय स्वाधीनता संग्राम। डॉ0 शिवनारायण खन्ना के लेख (पूर्व वर्णित) पृ0 48 पर उद्धृत।
7. विश्वनाथ मुखर्जी (पूर्व वर्णित) पृ0 42 पर उदधृत।
8. प्रो0 भवतोष दत्त – आनन्द बाजार पत्रिका, 12 आश्विन, फसली सन् 1976 (विश्वनाथ मुखजी कृत पूर्वोक्त पृ0 59 पर उद्धृत)

❖◆❖